2 अक्टूबर 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 13 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (प्रथम), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 2 सितम्बर से 11 सितम्बर, 2011 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

1. बड़नगर (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा प्रात: समयसार के कर्ताकर्म अधिकार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में शंका-समाधान द्वारा तत्त्वचर्चा हुई। विशेष उपलब्धि के रूप में इन्टरनेट के माध्यम से भी देश-विदेश में सैंकड़ों साधर्मियों ने प्रवचनों का लाभ लिया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

2. मुम्बई (मलाड) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर रामलीला मैदान में प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा समयसार की गाथा 17-19 पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य स्थानीय विद्वान पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित अनिलजी शास्त्री द्वारा कराये गये।

3. भोपाल-कोहेफिजा (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर जयपुर से श्री टोडरमल महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् समयसार की 14वीं गाथा पर प्रवचन हुए एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार से दशधर्मों की चर्चा हुई। साथ ही आपकी सुपुत्री विदुषी प्रतीति शास्त्री द्वारा प्रात: पूजन-विधान के उपरांत दोपहर में इष्टोपदेश की कक्षा एवं रात्रि में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

4. नागपुर (महा.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर इतवारी स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर में ब्र.नन्हे भैया सागर द्वारा तीनों समय प्रवचन हुये। दोपहर को कल्पद्रुम मण्डल विधान का आयोजन पण्डित अंकितजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित सुकुमारजी शास्त्री कोल्हापुर एवं पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री नागपुर द्वारा किया गया। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 9 सितम्बर को जयपुर पंचकल्याणक का आमंत्रण देने हेतु पधारे पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा 'धर्म क्यों' व 'इन भावों का फल क्या होगा' विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

5. सोनागिरि (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत ब्र.रवीन्द्रजी द्वारा समयसार पर प्रवचन एवं दोपहर में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित ज्ञानचंदजी जैन विदिशा द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक पर एवं पण्डित मानमलजी कोटा, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित मुकेशजी शास्त्री विदिशा, पण्डित लालजीरामजी विदिशा द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

6. सागर गोरमूर्ति-परकोटा (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा समयसार पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

7. अहमदाबाद-नवरंगपुरा (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन द्वारा समयसार की गाथा 17-18 पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

विशिष्ट उपलब्धि के रूप में यहाँ नवीन युवा फैडरेशन का गठन हुआ, जिसमें 85 युवाओं ने सदस्यता ग्रहण की। **- अजितकुमार जैन**

8. देवलाली-नासिक (महा.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन हुये। तत्पश्चात् पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर द्वारा समयसार की गाथा 320 पर एवं रात्रि में अपूर्व अवसर पर प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का पाठ एवं श्रीमती स्वर्णलताजी जैन द्वारा श्रावकाचार पर कक्षा ली गई। रात्रि में कु.प्रज्ञा जैन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। विधि-विधान के संपूर्ण कार्य पण्डित दीपकजी धवल भोपाल द्वारा कराये गये।

9. अहमदाबाद-रामेश्वर पार्क (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरान्त पण्डित ज्ञाता झांझरी उज्जैन द्वारा छहढाला पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। विशिष्ट उपलब्धि के रूप में यहाँ युवाओं को धर्म की रुचि जाग्रत हुई।

- श्यामलाल जैन

10. बेलगांव (कर्नाटक) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रतिदिन दशलक्षण मण्डल विधान एवं सोलहकारण मण्डल विधान के उपरांत पण्डित संजयजी सेठी जयपुर द्वारा समयसार की गाथा 308 से 311 पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर सारगर्भित मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में धवलश्री पाटील, सुधा चौकरे, पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री व पण्डित

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

सम्पादकीय – 65

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– १०२

विगत गाथा में कहा गया है कि कालद्रव्य द्रव्य नित्य व क्षणिक होने से यद्यपि दो विभाग रूप हैं, तथापि प्रवाह की अपेक्षा दीर्घ स्थिति का भी कहा जाता है।

अब प्रस्तुत गाथा में कहते हैं कि काल द्रव्य को भी द्रव्यपना तो है, परन्तु एकप्रदेशी होने से कायपना नहीं है। मूल गाथा इसप्रकार है–

एदे कालागासा धम्माधम्मा य पोग्गला जीवा।
लब्भंति दव्वसण्णं कालस्स दु णत्थि कायत्तं।।१०२।।

(हरिगीत)

जीव पुद्गल धर्म–अधर्म काल अर आकाश जो।
है द्रव्य संज्ञा सर्व की कायत्व है नहिं काल को।।१०२।।

यह काल, आकाश, धर्म–अधर्म पुद्गल और जीव सब द्रव्य संज्ञा को प्राप्त करते हैं, किन्तु काल द्रव्य को कायपना नहीं है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव टीका में कहते हैं कि यह काल को कायपने के विधान का तथा अस्तिकायपने के निषेध का कथन है।

जिसप्रकार जीव, पुद्गल धर्म–अधर्म और आकाश को द्रव्य के समस्त लक्षणों का सद्भाव होने से वे द्रव्यपने को प्राप्त करते हैं, उसीप्रकार काल भी द्रव्य संज्ञा को प्राप्त करता है; किन्तु काल में अन्य द्रव्यों की भाँति बहुप्रदेश नहीं हैं। यद्यपि उन पाँच द्रव्यों की संख्या भी लोकाकाश के प्रदेशों जितनी है; परन्तु कालद्रव्य के एकप्रदेशीपने के कारण अस्तिकायपना नहीं है। इसी कारण – ऐसा होने से ही यहाँ पंचास्तिकाय के प्रकरण में काल का कथन मुख्यतः से नहीं किया गया है।

मुख्यतः तो पाँच अस्तिकायों का ही है। काल को भी उन्हीं में अन्तर्भूत करके इसका संक्षिप्त उल्लेख किया है।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(सवैया इकतीसा)

जैसै जीव पुग्गल औ धर्माधर्म व्योम नाम,
दर्व–भेद लच्छिन तैं दर्वरूप ढलै है।
तैसे काल मिलैं छहौं दर्व नाम ए विसेष,
काल बिना काय अनू लोक मांहि रलै है।।
यातैं पंच अस्तिकाय विषैं मुख्य काल नाहिं,
परिनाम परजैतैं काल अनु भलै हैं।
सोई काल छिनभंगी संतति नय अंगी है,
दीर्घलौ सथाइ–पल्य सागर उदित है।
निहचै है काल नित्य द्रव्य रूप मित तातैं,
विवहार छिन साधै सोई समचित है।।४३७।।

इसी गाथा पर प्रवचन करते गुरुदेव श्री कानजीस्वामी भावार्थ में कहते हैं कि कालाणु रत्नों की राशि जैसे छूटे पड़े हैं। कालाणु एक प्रदेशी हैं, जबकि लोकाकाश के प्रदेश असंख्य हैं, इस कारण कालाणु द्रव्य भी असंख्य हैं तथा लोकाकाश के एक–एक प्रदेश पर एक–एक कालाणु रहता है। इसकारण काल कायवान नहीं है। इसी कारण इस पंचास्तिकाय ग्रन्थ में उसका विस्तार से कथन नहीं किया है, फिर भी पाँचों अस्तिकायों में गर्भित रूप से तो कथन आ ही गया है; क्योंकि जीव पुद्गलों के परिणाम में समय आदि व्यवहार काल ज्ञात हो ही जाता है। व्यवहारकाल जानने में आता है तो उससे निश्चय का अनुमान हो जाता है। इसीलिए पंचास्तिकाय में कालद्रव्य को भी गर्भित जानना चाहिए।''

इसप्रकार यहाँ आगम और युक्ति से कालद्रव्य की सिद्धि की गई है।●

गाथा– १०३

विगत गाथा में कहा गया है कि जीव, पुद्गल, धर्म–अधर्म एवं आकाश – ये सब द्रव्य संज्ञा को प्राप्त हैं; परन्तु काल में द्रव्यत्व तो है, पर कायत्व नहीं है।

अब प्रस्तुत गाथा में पंचास्तिकाय के अवबोध का फल कहकर पंचास्तिकाय के व्याख्यान का उपसंहार करते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है–

एवं पवयणसारं पंचत्थियसंगहं वियाणित्ता।
जो मुयदि रागदोसे सो गाहदि दुक्खपरिमोक्खं।।१०३।।

(हरिगीत)

इस भाँति जिनध्वनिरूप पंचास्ति प्रयोजन जानकर।
जो जीव छोड़े राग–रुष वह छूटता भव दुःख से।।१०३।।

इसप्रकार प्रवचन के सारभूत पंचास्तिकाय संग्रह को जानकर जो राग–द्वेष को छोड़ता है, वह दुःख से परिमुक्त होता है।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र के कथन का सार यहाँ पंचास्तिकाय के अवबोध का फल कहकर पंचास्तिकाय के व्याख्यान का उपसंहार करते हैं। ''वास्तव में संपूर्ण द्वादशांगरूप प्रवचन काल द्रव्य सहित पंचास्तिकाय से अन्य कुछ भी प्रतिपादित नहीं करता; इसलिए प्रवचन का सार ही यह 'पंचास्तिकाय संग्रह' है। जो पुरुष समस्त वस्तुत्व का कथन करने वाले इस ग्रन्थ को अर्थानुसार जानकर यथार्थरीति से इसमें कहे हुए जीवास्तिकाय में अपने को अत्यन्त विशुद्ध चैतन्य स्वभाव वाला निश्चित करके निज आत्मा को उस काल अनुभव में आता देखकर कर्मबंध की परम्परा को बढ़ाने वाले राग–द्वेष को छोड़ता है, वह पुरुष राग–द्वेष को क्षीण करता है एवं पूर्व हुए बंध से छूटता हुआ परिमुक्त है।

(दोहा)

ऐसे प्रवचनसार मैं अस्तिकाय को जानि।
राग–द्वेष को छांडकरि, गहौ दुःख परिहानि।।४४२।।

(सवैया इकतीसा)

काल युत पंच अस्तिकाय बिना और कछु,
कहैं नाहिं जैन तातैं अस्तिकाय सार है।
तामैं वस्तुरूप शुद्ध जीव अस्तिकाय बुद्ध,
पर के संयोग सेति सगरा विकार है।।
ऐसैं ही विवेक ज्योति जगै राग–द्वेष–मोह,
भगै परभाव सेती बंधन विडार है।
आकुलता दुःख डारि जथारूप धारि–धारि,
भेदज्ञानी मोख पालै आगम अपार है।।४४३।।

(दोहा)

षट् दरबातम ग्येय सब, ग्यान विषैं विलसंत।
ग्येय रूप सौ ग्येय हैं ग्याता ग्यान महंत।।४४५।।

कवि कहते हैं कि जो इसप्रकार द्वादशांग के सार रूप पंचास्तिकाय के स्वरूप को जानकर एवं फलस्वरूप राग-द्वेष को छोड़कर जो व्यक्ति स्वरूप को ग्रहण करता है वह सम्पूर्ण दुःख से मुक्त हो जाता है।

आगे सवैया एवं दोहे में कहते हैं कि काल सहित पंचास्तिकाय के सिवा जिनागम में और कुछ कहा ही नहीं है, इसलिए ये पंचास्तिकाय ही सारभूत हैं।

इन पंचास्तिकायों में एक जीवद्रव्य ही ज्ञानवान हैं; परन्तु इसमें पर के संयोग से राग-द्वेषादि रूप विकार अनादि से हैं। जब ऐसी भेदज्ञान की ज्योति जीव में जागती है तो परभाव उत्पन्न हुए विकार नष्ट हो जाते हैं। बन्धन टूट जाते हैं। इस प्रकार विवेक ज्योति जगने पर मोह-राग-द्वेष नष्ट हो जाते हैं। आकुलता मिट जाती है, जीव मुक्ति को प्राप्त हो जाता है।

इसके बाद दोहे में कहा है कि सब छहों द्रव्य रूप ज्ञेय आत्मज्ञान में सुशोभित होते हैं तथा आत्मा ज्ञाता रूप से महानता को प्राप्त कर लेता है।

कानजीस्वामी अपने प्रवचन में कहते हैं कि ''पंचास्तिकाय के ज्ञान का फल मुक्ति है - ऐसा आचार्य बताते हैं। तथा वे कहते हैं कि छहों द्रव्य स्वतंत्र हैं, किसी एक के कारण दूसरा नहीं है। मैं आत्मा हूँ, जड़ से जुदा हूँ तथा अनन्त परजीवों से भी जुदा हूँ इस कारण पर से न मुझे लाभ है और न कोई हानि है। प्रत्येक पदार्थ की क्रिया स्वतंत्र हो रही है।

इसप्रकार भेदज्ञान होने पर दृष्टि पर इष्ट पदार्थों में प्रीति एवं अनिष्ट पदार्थों में द्वेष को छोड़ देता है।''

इसप्रकार सम्पूर्ण कथन का निष्कर्ष यह है कि प्रथम निमित्त से दृष्टि हटकर, रुचि छूटकर स्वभाव पर आती है। बाद में स्वभाव में स्थिर होकर राग-द्वेष छूटने लगते हैं। इस तरह भव्य जीव संसार के दुःखों से छूटकर मुक्ति प्राप्त करते हैं। ●

सीढी शिलान्यास संपन्न

खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ पंचमेरु गजदंत नंदीश्वर जिनमंदिर के ऊपर 5.5 फीट की पद्मासन जिन प्रतिमा विराजमान की जा रही है, ऊपर पहुँचने हेतु दिनांक 14 सितम्बर को सीढी शिलान्यास संपन्न हुआ।

विधि-विधान के कार्य पण्डित मुकेशजी जैन कोठादार, पण्डित संजयजी जैन, पण्डित सचिनजी मोदी एवं पण्डित एकत्वजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये। **- सुनील जैन सरल, खनियांधाना**

(पृष्ठ 4 का शेष...)

प्रकाशचंदजी झांझरी द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षशास्त्र एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

26. अलवर-चैतन्य एन्क्लेव (राज.) : यहाँ दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित जगदीशजी पंवार उज्जैन द्वारा प्रात: एवं सायंकाल प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित समकितजी मोदी कोटा द्वारा बालकक्षा एवं रात्रि में आदिनाथ जिनालय में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

27. मुजफ्फरनगर-नई मण्डी (उ.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित विवेकजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरांत तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

28. यमुनानगर (हरियाणा) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित दीपांशुजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: नवलब्धि विधान एवं दोनों समय प्रवचन हुये।

श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में सम्मानित

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के स्नातक पण्डित संजयकुमारजी शाह (व्याख्याता-राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, डूंगरपुर) को सामाजिक कार्यों, संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार, नवीन शिक्षण पद्धति से श्रेष्ठ अध्ययन कार्यों, शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम, उत्कृष्ट लेखन शैली एवं अनेक विषयों में स्नातकोत्तर शिक्षा जैसे उत्कृष्ट कार्यों के लिए दिनांक 5 सितम्बर को 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर बिड़ला ऑडिटोरियम, जयपुर में **श्रेष्ठ शिक्षक** के रूप में सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री शिवराज पाटील (राजस्थान राज्यपाल) द्वारा मोमेन्टो, श्री अशोक गहलोत (राजस्थान मुख्यमंत्री) द्वारा प्रशस्ति-पत्र एवं श्री भंवरलाल मेघवाल (शिक्षा मंत्री) द्वारा 11 हजार का चेक प्रदान किया गया।

इस उपलब्धि पर जैनपथप्रदर्शक की ओर से हार्दिक बधाई !

सर्वोदय अहिंसा अभियान संचालित करें

वीर निर्वाणोत्सव के अवसर पर पटाखों से होने वाली जन-धन हानि के प्रति लोगों को जागरूक करने हेतु अ.भा.जैन युवा फैडरेशन द्वारा रंगीन पोस्टर एवं हैंडबिल लगभग 25 हजार की संख्या में प्रकाशित कर संपूर्ण देश के जिनमंदिरों, तीर्थक्षेत्रों, विद्यालयों, सार्वजनित संस्थाओं को भेजे जाएंगे। साथ ही पोस्टर डिजाइन की सी.डी., आगजनी की घटनाओं को दर्शाती स्लाइड शो की सी.डी. विद्यालय एवं पाठशालाओं द्वारा मंचन योग्य लघु नाटकों व लघु पुस्तिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है, जिसमें विद्वानों/अध्यापकों के व्याख्यान हेतु तथ्यपरक बिन्दुओं का संकलन है।

आपसे अनुरोध है कि आप भी स्थानीय स्तर पर यह अभियान चलायें। एतदर्थ आपको कितने पोस्टर/हैंडबिल की आवश्यकता है, लिखकर भेजें।

संपर्क : संजय शास्त्री, बी. 180, ए-2, मंगल मार्ग, बापूनगर, जयपुर-302015, मोबाइल : 09785999100

आगामी कार्यक्रम...

चैतन्यधाम-अहमदाबाद (गुज.) में पू. श्री कुन्दकुन्द कहान धर्मरत्न पं. श्री बाबूभाई मेहता दिगम्बर जैन सत्समागम पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट के अन्तर्गत द्वितीय महिला शिविर का आयोजन दिनांक 5 से 8 नवम्बर 2011 तक किया जा रहा है। सभी माता-बहनें शिविर में अवश्य लाभ लेवें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 से 11 अक्टूबर	जयपुर (राज.)	शिक्षण शिविर
21 व 22 अक्टूबर	मंगलायतन-अलीगढ	सोगानीजी की जन्मशती
23 से 27 अक्टूबर	देवलाली	दीपावली
6 से 10 दिसम्बर	दाहोद (गुज.)	पंचकल्याणक
20 से 24 जनवरी 2012	राघौगढ (म.प्र.)	पंचकल्याणक

(पृष्ठ 1 का शेष...)

मिथुनजी शास्त्री द्वारा प्रवचन व कक्षायें ली गई। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

11. ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन जयपुर द्वारा प्रात: बड़ा मंदिर में समयसार, दोपहर में सीमंधर जिनालय में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं सायंकाल नया मंदिर में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

12. कलकत्ता : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा प्रात: इष्टोपदेश एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में डॉ. ममता जैन द्वारा पंचभाव पर कक्षा ली गई एवं रात्रि में कु.बिपाशा जैन के सहयोग से सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। प्रात: श्री दिलीपजी सेठी व श्री हर्षदभाई शाह द्वारा नवलब्धि विधान कराया गया। स्थानीय विद्वानों में श्री प्रकाशभाई शाह एवं श्री संजयजी सेठी द्वारा प्रवचन हुये।

इस अवसर पर जयपुर पंचकल्याणक का आमंत्रण देने हेतु पधारे पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने पंचकल्याणक का आमंत्रण दिया एवं पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा 'इन भावों का फल क्या होगा' विषय पर तीन दिनों तक मार्मिक व्याख्यान हुये।

विशिष्ट उपलब्धि के रूप में यहाँ युवा फैडरेशन की नई शाखा का गठन किया गया।

13. मुम्बई–अंधेरी (ई.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र, दोपहर में विभिन्न विषयों एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

14. बड़ौदरा (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री आदिनाथ दि.जैन जिनमन्दिर में डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली द्वारा प्रात: समयसार के निर्जरा अधिकार पर एवं सायंकाल क्रमबद्धपर्याय पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। **– रजनीकांत डी. शाह, बड़ौदरा**

15. रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित प्रवीणजी शास्त्री रायपुर द्वारा विवेकानन्दनगर में पंचपरावर्तन पर एवं शंकरनगर में चन्द्रप्रभ जिनालय में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित नितिनजी शास्त्री खड़ैरी ने कराये।

16. मुम्बई–जोगेश्वरी (वेस्ट): यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रतिदिन पण्डित राजेशजी जैन जबलपुर द्वारा दशलक्षण धर्म, छहढाला एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। प्रात: जिनेन्द्र पूजन भी करायी गयी।

17. बून्दी (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित धर्मचन्दजी जैन जैथल द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन के अतिरिक्त दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं शंका–समाधान के रूप में तत्त्वचर्चा हुई।

– प्रेमचंद गोधा

18. अजमेर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री वीतराग–विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के अन्तर्गत श्री सीमंधर जिनालय में पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर द्वारा प्रात: समयसार के जीवाजीवाधिकार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रवचनोपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। प्रात: प्रतिदिन पण्डित कांतिकुमारजी जैन इन्दौर द्वारा दशलक्षण मण्डल विधान संपन्न हुआ एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का कार्यक्रम हुआ। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित हुये।

इस अवसर पर पण्डित रजनीभाई दोशी के निर्देशन में 30 जनवरी से 5 फरवरी 2012 तक होने वाले ऋषभायतन, वैशालीनगर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की गई।

– मनोज कासलीवाल

19. अहमदाबाद–मणिनगर (गुज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: नित्यनियम पूजन के उपरांत गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन हुये। तत्पश्चात् पण्डित मनोजकुमारजी जैन जबलपुर द्वारा समयसार के आस्रव व संवर अधिकार पर प्रवचन हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं प्रतिक्रमण के उपरांत दशलक्षण धर्म एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

दिनांक 12 सितम्बर को रात्रि में ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रवचन का लाभ भी मिला। **– संजय जे. मेहता**

20. चेन्नई (तमिलनाडु) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर **आदम्बाक्कम** में पण्डित सिंहचंद्रजी शास्त्री, डॉ. बी.उमापतिजी शास्त्री, पण्डित जयराजनजी शास्त्री एवं पण्डित सुरेशजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म सहित अनेक विषयों पर प्रवचन हुये।

कोलत्तूर में श्री विजय पार्श्वनाथ दि.जैन मंदिर में पण्डित जम्बूकुमारजी शास्त्री, डॉ. बी. उमापतिजी शास्त्री, पण्डित इलंगोवनजी शास्त्री, पण्डित जयराजनजी शास्त्री, पण्डित बाबू शास्त्री, पण्डित जयकुमारजी शास्त्री, पण्डित जिनेशजी शास्त्री आदि विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

पुलल में श्री चतुर्मुख चिंतामणि पार्श्वनाथ दि.जैन मन्दिर में पण्डित विनोदजी शास्त्री एवं श्री सुभाषचंदजी जैन आदि विद्वानों द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

उपरोक्त सभी स्थानों पर प्रतिदिन सोलहकारण पूजन–विधान, दशलक्षण धर्म पर प्रवचन, जिनेन्द्र भक्ति एवं तत्त्वचर्चा संपन्न हुई।

– धरणेन्द्रदास जैन, चेन्नई

21. पचमढी (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

22. कोटा–छावनी (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर सामूहिक पूजन के पश्चात् प्रात: एवं दोपहर में श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये।

23. मुमुक्षु आश्रम–कोटा (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के पश्चात् पण्डित सौरभजी शास्त्री द्वारा पुरुषार्थसिद्धिउपाय पर प्रवचन एवं दोपहर में विभिन्न विषयों पर कक्षायें हुईं। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

24. खनियांधाना (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर पण्डित अरुणकुमारजी मोदी सागर द्वारा प्रात: नियमसार, दोपहर में नयचक्र एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त श्री नंदीश्वर सेवा संघ, श्री नंदीश्वर विद्यापीठ एवं वीतराग विज्ञान पाठशाला के छात्रों द्वारा प्रतिदिन सामूहिक पूजन के साथ रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **– सुनील जैन सरल, खनियांधाना**

25. सिवनी (म.प्र.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: श्री पंचबालयति जिनालय में नित्य नियम पूजन के उपरांत पण्डित

(शेष पृष्ठ 3 पर...)

श्री टोडरमल स्मारक भवन के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में सक्रिय भाग लेने हेतु अब निम्न विवरण के अनुसार कुछ ही पद शेष रहे हैं, अधिकांश भरे जा चुके हैं। जिन भी भाईयों की इनमें जिसप्रकार भी सहयोग देने की भावना हो, वे अपना आरक्षण शीघ्र कराने हेतु जयपुर कार्यालय में श्री पीयूष जैन से उनके मो. नं. 9785643202 पर संपर्क करें अथवा info@ptst.in **पर ई–मेल करें –**

महामहोत्सव के शेष पात्र एवं उनकी राशियाँ

(दिनांक 25 सितम्बर तक)

कुबेर	– चर्चा द्वारा
माता पिता	– चर्चा द्वारा
यज्ञनायक	– चर्चा द्वारा
इशान इन्द्र	– चर्चा द्वारा
महेन्द्र इन्द्र	– चर्चा द्वारा
महामंत्री	– चर्चा द्वारा
8 से 12 नं.तक के इन्द्र	– 5 लाख (प्रत्येक)
8 से 12 नं तक के प्रतीन्द्र	– 2.5 लाख (प्रत्येक)
2 से 8 नं. तक के राजा	– 2 लाख (प्रत्येक)
12 से 16 नं. तक के राजा	– 1.5 लाख (प्रत्येक)
21 से 24 नं. तक राजा	– 1 लाख (प्रत्येक)
राजा सोम (आहारदान)	– चर्चा द्वारा
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के ध्वजारोहणकर्त्ता	– चर्चा द्वारा
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के मण्डप उद्घाटनकर्त्ता	– 5 लाख
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के मंच उद्घाटनकर्त्ता	– 2.5 लाख
सीमंधर जिनालय के उद्घाटनकर्त्ता	– 5 लाख
त्रिमूर्ति जिनालय के उद्घाटनकर्त्ता	– चर्चा द्वारा
पाषाण के 21 इंच युगमंधर एवं बाहु भगवान के भेंटकर्त्ता एवं विराजमानकर्त्ता (2)	– चर्चा द्वारा
पाषाण के 51 इंच वासूपूज्य भगवान के भेंटकर्त्ता एवं विराजमानकर्त्ता (4)	– चर्चा द्वारा
पाषाण के 51 इंच नेमिनाथ भगवान के भेंटकर्त्ता एवं विराजमानकर्त्ता (2)	– चर्चा द्वारा
भोजन हेतु सहयोग	– 1 लाख (प्रत्येक)

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

82 बाईसवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

पंचास्तिकाय की समय व्याख्या टीका में तो लिखा है कि भक्ति की प्रधानतावाली भक्ति तो अज्ञानियों के होती है। तीव्र राग-ज्वर मिटाने के लिए और अस्थान में राग न हो जावे – इसलिए कभी-कभी ज्ञानियों के भी होती है। अत: **भक्ति के नाम पर स्वाध्याय का निषेध करना ठीक नहीं है।**

रही आत्मानुभव की बात, सो आत्मानुभव तो सर्वोत्कृष्ट है ही, पर यह आत्मा आत्मानुभव में सदा रह नहीं सकता; अत: **जब आत्मानुभव में उपयोग न रहे, तब तो करणानुयोग का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।**

इस पर कुछ लोग कहते हैं कि हम स्वाध्याय का निषेध नहीं करते, परन्तु करणानुयोग में कठिनता बहुत है, इसलिए उसके अभ्यास से खेद होता है। अत: करणानुयोग में उलझने से कोई लाभ नहीं है – हम तो मात्र यह कहते हैं।

ऐसे लोगों को समझाने हेतु पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''यदि वस्तु शीघ्र जानने में आये तो वहाँ उपयोग उलझता नहीं है; तथा जानी हुई वस्तु को बारम्बार जानने का उत्साह नहीं होता, तब पापकार्यों में उपयोग लग जाता है; इसलिए अपनी बुद्धि अनुसार कठिनता से भी जिसका अभ्यास होता जाने, उसका अभ्यास करना तथा जिसका अभ्यास हो ही न सके, उसका कैसे करे ?

तथा तू कहता है – खेद होता है; परन्तु प्रमादी रहने में तो धर्म है नहीं; प्रमाद से सुखी रहे, वहाँ तो पाप ही होता है; इसलिए धर्म के अर्थ उद्यम करना ही योग्य है।[१]''

सरल विषय का स्वाध्याय करने से उपयोग में वैसी एकाग्रता नहीं होती, जैसे कठिन विषय को समझने के प्रयास में होती है; इसलिए भी प्रमाद छोड़कर करणानुयोग के स्वाध्याय में उपयोग को लगाना चाहिए।

कठिन विषय के स्वाध्याय में खेद होता है – यह कहकर प्रमाद का पोषण करना तो किसी भी दृष्टि से उचित नहीं है। अत: करणानुयोग के विषय को समझने में शक्ति अनुसार उद्यम तो करना ही चाहिए।

कुछ लोग कहते हैं कि चरणानुयोग में बाह्य व्रतादि पालने का उपदेश है; परन्तु इसमें कुछ लाभ तो है नहीं, अपने परिणाम निर्मल होना चाहिए।

उनसे कहते हैं कि अपने परिणामों और बाह्य प्रवृत्ति में निमित्त-नैमित्तिक संबंध है; क्योंकि छद्मस्थ की क्रियायें परिणामपूर्वक ही होती हैं।

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''तथा यदि बाह्य संयम से कुछ सिद्धि न हो तो सर्वार्थसिद्धिवासी देव सम्यग्दृष्टि बहुत ज्ञानी हैं, उनके तो चौथा गुणस्थान होता है और गृहस्थ श्रावक मनुष्यों के पंचम गुणस्थान होता है, सो क्या कारण है? तथा तीर्थंकरादिक गृहस्थपद छोड़कर किसलिए संयम ग्रहण करें ?

इसलिए यह नियम है कि बाह्य संयम-साधन बिना परिणाम निर्मल नहीं हो सकते; इसलिए बाह्य साधन का विधान जानने के लिए चरणानुयोग का अभ्यास अवश्य करना चाहिए।[१]''

ध्यान रहे, पण्डित टोडरमलजी का स्पष्टरूप से यह कहना है कि परिणामों की निर्मलता के लिए जीवन का निर्मल होना अत्यन्त आवश्यक है। परिणामों में निर्मलता से जीवन निर्मल होता है और जीवन की निर्मलता से परिणाम निर्मल होते हैं। ऐसा ही परस्पर निमित्त-नैमित्तिक सहज संबंध है।

मनुष्यगति में तो संयम की ही प्रधानता है; क्योंकि देवगति और नरकगति में तो संयम होता ही नहीं है तथा तिर्यंचगति में भी मात्र देशसंयम ही होता है। मात्र मनुष्यगति ही ऐसी है कि जिसमें पूर्ण संयम हो सकता है। **चरणानुयोग के शास्त्रों के स्वाध्याय बिना जब हमें यही पता नहीं होगा कि जीव कहाँ-कहाँ हैं, किन-किन खाद्य पदार्थों में अनंत स्थावर जीव हैं, त्रस जीव हैं; तो फिर हम उनकी दया का पालन कैसे कर सकेंगे, हमारा आचरण अहिंसक आचरण कैसे होगा ?**

हमारा खान-पान, हमारा उठना-बैठना, पहिनना-ओढ़ना कैसा होना चाहिए – यह जाने बिना हमारा जीवन शुद्ध और सात्त्विक कैसे होगा ? यह सब सोचने की बात है।

इन सबकी जानकारी के लिए हमें चरणानुयोग का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

कुछ लोग कहते हैं कि द्रव्यानुयोग में व्रत-संयमादि व्यवहार धर्म को हेय कहा है और सम्यग्दृष्टि के विषय-भोगादि को भी निर्जरा का कारण कहा है। इसे सुनकर लोग स्वच्छन्द हो जावेंगे और पुण्य कार्यों को छोड़कर पाप कार्यों में लगेंगे। इसलिए द्रव्यानुयोग के शास्त्रों को पढ़ना-सुनना ठीक नहीं है।

ऐसे लोगों को समझाने हेतु पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''जैसे गधा मिश्री खाकर मर जाये तो मनुष्य तो मिश्री खाना नहीं छोड़ेंगे; उसीप्रकार विपरीतबुद्धि अध्यात्मग्रन्थ सुनकर स्वच्छन्द हो जाये तो विवेकी तो अध्यात्मग्रन्थों का अभ्यास नहीं छोड़ेंगे।

इतना करे कि जिसे स्वच्छन्द होता जाने; उसे जिसप्रकार वह स्वच्छन्द न हो, उसप्रकार उपदेश दे।

तथा अध्यात्मग्रन्थों में भी स्वच्छन्द होने का जहाँ-तहाँ निषेध करते हैं; इसलिए जो भली-भाँति उनको सुने, वह तो स्वच्छन्द होता नहीं; परन्तु एक बात सुनकर अपने अभिप्राय से कोई स्वच्छन्द हो तो ग्रन्थ का तो दोष है नहीं, उस जीव ही का दोष है।

तथा यदि झूठे-दोष की कल्पना करके अध्यात्मशास्त्रों को पढ़ने-सुनने का निषेध करें तो मोक्षमार्ग का मूल उपदेश तो वहाँ ही है; उसका निषेध करने से तो मोक्षमार्ग का निषेध होता है।

जैसे – मेघवर्षा होने पर बहुत से जीवों का कल्याण होता है

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २९१

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २९२

और किसी को उल्टा नुकसान हो तो उसकी मुख्यता करके मेघ का तो निषेध नहीं करना; उसीप्रकार सभा में अध्यात्म उपदेश होने पर बहुतसे जीवों को मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है, परन्तु कोई उल्टा पाप में प्रवर्ते, तो उसकी मुख्यता करके अध्यात्मशास्त्रों का तो निषेध नहीं करना।

तथा अध्यात्म ग्रंथों से कोई स्वच्छन्द हो; सो वह तो पहले भी मिथ्यादृष्टि था, अब भी मिथ्यादृष्टि ही रहा। इतना ही नुकसान होगा कि सुगति न होकर कुगति होगी। परन्तु अध्यात्म उपदेश न होने पर बहुत जीवों के मोक्षमार्ग की प्राप्ति का अभाव होता है और इसमें बहुत जीवों का बहुत बुरा होता है; इसलिए अध्यात्म उपदेश का निषेध नहीं करना।[१]''

देखो, पण्डितजी कितने कठोर शब्दों में बता रहे हैं कि गधा मिश्री खाने से मर जाये तो सज्जन तो मिश्री खाना छोड़ते नहीं हैं; उसीप्रकार **यदि कोई विपरीत बुद्धि जीव अध्यात्म ग्रन्थों को पढ़कर भ्रष्ट हो जावें तो उसको आधार बनाकर समझदार लोगों को तो अध्यात्म ग्रंथों के स्वाध्याय से विरक्त नहीं होना चाहिए।**

हाँ, इस संदर्भ में सावधानी अवश्य रखना चाहिए। यही कारण है कि अध्यात्म ग्रन्थों में भी स्थान-स्थान पर सावधान किया है, स्वच्छन्द होने का निषेध किया है। हमारा भी यह कर्त्तव्य है कि स्वयं तो सावधान रहें ही, समय-समय पर अन्य साधर्मी भाई-बहिनों को भी सावधान करते रहें। फिर भी कोई अज्ञानी सावधानी न रखे और स्वच्छन्द हो जावे तो इसमें अध्यात्म शास्त्रों का तो कोई दोष नहीं है, उसका ही दोष है।

यदि स्वच्छन्द होने के झूठे भय से अध्यात्म शास्त्रों के अध्ययन-मनन-चिन्तन का निषेध किया जायेगा तो मोक्षमार्ग का ही निषेध हो जावेगा; क्योंकि मोक्षमार्ग का मूल उपदेश तो अध्यात्मशास्त्रों में ही है।

पण्डितजी ने मेघवर्षा का उदाहरण देकर यह समझाया है कि मेघवर्षा से किसी को जुखाम हो जाये तो क्या हम बरसात का ही निषेध कर देंगे ?

नहीं, कदापि नहीं; उसीप्रकार अध्यात्मचर्चा सुनकर एकाध जीव स्वच्छन्द हो जावे तो क्या उसके भय से सभा में अध्यात्मशास्त्रों पर प्रवचन करना बन्द कर देना समझदारी का काम है ? नहीं, कदापि नहीं।

पण्डितजी तो यहाँ तक लिखते हैं कि जो व्यक्ति अध्यात्म सुनकर स्वच्छन्द होता है, वह तो पहिले भी मिथ्यादृष्टि था और अभी भी मिथ्यादृष्टि ही रहा। विशेष नुकसान क्या हुआ ?

हाँ, यह बात अवश्य है कि शुभभाव और शुभ क्रियाओं के कारण कदाचित् उसे देवादि गति की प्राप्ति हो जाती; परन्तु अब उन शुभभावों और शुभक्रियाओं से विरक्त हो जाने के कारण और अशुभभावों व अशुभक्रियाओं में प्रवृत्त हो जाने से कदाचित् नरकादि में जाना पड़े; परन्तु देवगति और नरकगति तो संसार के ही रूप हैं; आखिर तो वह संसार ही में रहा; मुक्तिमार्ग में न तो पहले था और न अब ही रहा; अत: कोई खास नुकसान नहीं हुआ।

यदि उसके उस **थोड़े से नुकसान को ध्यान में रखकर अध्यात्मशास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन, मनन, चिंतन - इन पर होनेवाले प्रवचनों को बंद कर देंगे तो फिर मोक्षमार्ग ही अवरुद्ध हो जायेगा।** यदि ऐसा हुआ तो फिर जैन शास्त्रों के स्वाध्याय की उपयोगिता ही क्या रही ?

अत: आध्यात्मिक शास्त्रों के पठन-पाठन, सभा में उन पर प्रवचनों को रोकना जैनदर्शन का विरोध है, नरक-निगोद का कारण है।

यह एक ऐसा महापाप है कि जिसके कारण मोक्षमार्ग का ही निर्मूलन हो जाता है। अत: आत्मार्थियों को इस महापाप से अवश्य बचना चाहिए और अन्य साधर्मी भाई-बहिनों को भी बचाना चाहिए।

प्रश्न : अरे, भाई ! समयसार पढ़कर पण्डित बनारसीदासजी जैसे लोग भी भ्रष्ट हो गये थे, उन्होंने अपनी आत्मकथा '**अर्द्धकथानक**' में स्वयं लिखा है -

(चौपाई)

तब बनारसि वांचै नित्त। भाषा अरथ विचारै चित्त।
पावै नहीं अध्यात्म पेच। मानै बाहिज किरिआ हेच।।५९४।।

(दोहा)

करनी कौ रस मिटि गयौ, भयौ न आतमस्वाद।
भई बनारसि की दसा, जथा ऊंट कौ पाद।।५९५

(चौपाई)

ऐसी दसा भई एकंत। कहौं कहां लौं सो बिरतंत।
बिनु आचार भई मति नीच। सांगानेर चले इस बीच।।५९९।।

(दोहा)

चन्द्रभान बनारसी, उदैकरन अरु थान।
चारौं खेलहिं खेल फिरि, करहिं अध्यातम ग्यान।।६०२।।
नगन हौंहि चारौं जनें, फिरहिं कोठरी मांहि।
कहहिं भए मुनिराज हम, कछू परिग्रह नांहि।।६०३।।[१]

अरथमलजी ढोर ने पण्डित बनारसीदासजी से पाण्डे राजमलजी कृत समयसार के कलशों की टीका को पढ़ने का आग्रह किया। बनारसीदासजी ने उसे पढ़ा, पर उसमें प्रतिपादित अध्यात्म का रहस्य तो समझ नहीं पाये; पर बाह्य धर्माचरण को हेय मानने लगे। सदाचार का रस तो मिट गया, पर आत्मा का स्वाद नहीं आया

अध्यात्म के एकान्त से ऐसी दशा हो गई कि उसका वर्णन करना संभव नहीं है। बनारसीदास, चन्द्रभान, उदयकरण और थानमल - चारों लोग नग्न होकर कोठरी में चक्कर लगाने लगे तथा कहने लगे कि देखो, हमारे पास कोई परिग्रह नहीं है, इसलिए यह समझो कि हम मुनिराज हो गये हैं।

देखो, भाई ! जब बनारसीदासजी जैसे विद्वानों की भी समयसार पढने से ऐसी दशा हो गई थी तो फिर हम और आप कौन से खेत की मूली हैं ? इसलिए मेरा कहना तो यही है कि समयसारादि अध्यात्म ग्रन्थों का स्वाध्याय हम और आप जैसे साधारण लोगों को तो करना ही नहीं चाहिए।

उत्तर : क्या आपने बनारसीदासजी की कहानी इतनी ही पढ़ी है,

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, आठवाँ अधिकार, पृष्ठ २९२

१. कविवर बनारसीदास, अर्द्धकथानक, पृष्ठ ६६-६७

उसके आगे क्या हुआ, इसका पता तुम्हें नहीं है।

अरे, भाई ! शृंगार रस के रसिया कवि बनारसीदासजी ने अपनी शृंगार रस की कविताओं को इसी समयसार के प्रभाव से गोमती नदी में बहा दिया था। यदि बनारसीदासजी समयसार नहीं पढ़ते तो नाटक समयसार की रचना कैसे करते ? **अन्ततोगत्वा उनका जीवन समयसार के स्वाध्याय से ही अध्यात्ममय बना था।**

पण्डित रूपचन्दजी ने जब उन्हें गोम्मटसार पढ़ाया तो उनकीसभी गलतियाँ सुधर गईं। यही कारण है कि उन्होंने नाटक समयसार में एक गुणस्थान अधिकार पृथक् से लिखा और उसमें चतुर्थ-पंचम गुणस्थान की चर्चा करते हुए विस्तार से श्रावक के आचरण पर प्रकाश डाला।

इसप्रकार द्रव्यानुयोग के साथ-साथ उन्होंने करणानुयोग और चरणानुयोग का भी स्वाध्याय किया और वे सही रास्ते पर आ गये। हम भी तो पीछे करणानुयोग और चरणानुयोग के स्वाध्याय की प्रेरणा दे आये हैं; उनका स्वाध्याय करने का आग्रह कर चुके हैं। हम यह कहाँ कह रहे हैं कि आप अकेले अध्यात्म ग्रंथों का ही अध्ययन करें।

हमारी दृष्टि में तो चारों अनुयोगों का स्वाध्याय करना अत्यन्त आवश्यक है। किसी अनुयोग को पढ़ना ही नहीं - ऐसा तो हम नहीं कहते। हम तो यह कहते हैं कि चारों अनुयोगों का यथासाध्य स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

(क्रमशः)

क्षमावाणी एवं विद्वत् सम्मान समारोह संपन्न

नई दिल्ली : यहाँ आत्मसाधना केन्द्र पर दिनांक 12 सितम्बर को मुमुक्षु समाज द्वारा सामूहिक क्षमावणी का मांगलिक कार्यक्रम एवं दिल्ली के विभिन्न उपनगरों में दशलक्षण पर्व पर गए विद्वानों का सम्मान समारोह सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर सर्वप्रथम गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरांत पण्डित सुदीपजी बीना का प्रवचन हुआ। तत्पश्चात् आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री रणधीरसिंहजी जैन ने की। विशिष्ट के रूप में श्री शिखरचंदजी राजेन्द्रनगर, श्री एस.के.जैन पीरागढी, श्री सुभाषचंदजी जैन नांगलोई, श्री पंकजजी जैन राजेन्द्रनगर, श्री श्रेयांसजी जैन एवं श्री मंगलसेनजी जैन मंचासीन थे। दिल्ली के विभिन्न उपनगरों में प्रवचनार्थ एवं विधानार्थ गए विद्वानों का अभिनन्दन श्री विमलकुमारजी जैन (मैनेजिंग ट्रस्टी-आत्मार्थी ट्रस्ट) एवं श्रीमती कुसुम जैन विवेक विहार द्वारा किया गया। आत्मार्थी ट्रस्ट के समस्त ट्रस्टीगणों द्वारा अतिथियों एवं विद्वानों का चंदन तिलक व माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया।

कार्यक्रम में पण्डित सुबोधजी सिवनी एवं पण्डित सुरेशचंदजी टीकमगढ ने क्षमावणी पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इसके पश्चात् आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन की छात्राओं ने अंग्रेजी व हिन्दी में अपने विचार व्यक्त किये एवं मांगलिक भजनों की प्रस्तुती दी।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित संदीपजी जैन शास्त्री द्वारा किया गया।

शोक समाचार

1. सागर (म.प्र.) निवासी स्वतंत्रता सेनानी, पूर्व सांसद एवं म.प्र. कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष सेठ डालचंदजी जैन का दिनांक 25 सितम्बर को 83 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामों से देहावसान हो गया। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में तो आपका महत्वपूर्ण योगदान था ही, जैन समाज के भी आप सभी के चहेते नेता थे। अ.भा.दि.जैन परिषद के अध्यक्ष के रूप में रहकर आपने परिषद की गौरव गरिमा में चार चांद लगा दिए, जिससे उन्हें आज भी याद किया जाता है। समाज सुधारक के रूप में भी आपकी विशिष्ट पहिचान थी। आपकी इच्छानुसार मरणोपरांत नेत्रदान किया गया तथा तेरहवीं का निषेध रखा। तारण समाज के लिए तो आपका अनुकरणीय योगदान रहा ही, तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं महासमिति में भी आप अग्रिम पंक्ति में रहे।

2. ललितपुर (उ.प्र.) निवासी श्री चम्पालालजी जैन पटवारी का दिनांक 14 अगस्त को 92 वर्ष की आयु में शान्तपरिणामों से देहावसान हो गया।

ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. सुदीपजी शास्त्री दिल्ली के पिताजी थे। आपकी स्मृति में संस्था को 100/- रुपये प्राप्त हुये।

3. आगरा निवासी श्रीमती कमला जैन पत्नी श्री सुमतचंदजी जैन का दिनांक 28 अगस्त को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत धार्मिक महिला थीं। आप स्मारक भवन में आयोजित अनेक शिविरों में आकर तत्त्वज्ञान का लाभ लेती थीं। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित विनीतकुमारजी शास्त्री की माताजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु एक-एक हजार रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों-यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127